श्रीलाल शुक्ल जी का जीवन विकास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

Dr. D. M. Rathod
Associate Professor in Hindi
Smt. B. V. Dhanak College,
Bagasara

श्रीलाल शुक्ल जी द्विदशकों में राजनीति तथा नेता समाज पर पूरी तरह छाये हुए दिखाई देते हैं, किंतु क्या राजनीति तथा नेता के द्वारा सचमुच समाज की सेवा की जा रही है ? आज तो केवल निजी स्वार्थ हेतु भोग विलास में प्रवेश करते हुए दिखाई देते हैं। जनता को बड़े-बड़े शब्दों के जाल में फँसाकर अपना असली रूप छुपाते हैं। आज़ादी से पहले गरीब भारतीयों को विशेषकर किसानों को खूब सताया गया था, किंतु आजादी के बाद भी आर्थिक उभार तथा राजनीति का फायदा किसानों को नहीं मिल पाया। वे तो आज भी गरीब है, कमजोर बीमार हैं जिन्हें कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती। सत्तापक्षों के दिमाग में सिर्फ अपनी बात होती है। झूठे सेवाभाव को दिखाकर वोट पाने तक के लिए मात्र आज का नेता कार्यरत है । राजनीति के इस बिगड़े तथा और अधिक बिगड़ते जा रहे रूप को देखकर ही शुक्ल जी व्यथित हुए हैं। साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत शुक्ल जी के उपन्यास में भी भरपूर व्यंग्य देखने को मिलता है। राजनीतिक, दल, चुनाव, जनतंत्र, नेता, पुलिस व्यवस्था झूठे मुकदमे, भ्रष्टाचार, आतंक, पुलिस की अकर्मण्यता, शिक्षा, समाज, वन महोत्सव, मिलावट जैसे विविध विषयों पर इस उपन्यास में तीव्र कटाक्ष किया गया है । शुक्ल जी अपनी शैली ली तथा भाषा से अपने व्यंग्य साहित्य को रोचक बनाने में संपूर्ण सफल है।

इस तरह बड़ी ईमानदारी के साथ श्रीलाल शुक्ल जी साहित्य, कला, संस्कृति, राजनीति, इतिहास आदि क्षेत्र की कमियों को पाठक के सामने लाकर उसे जागृत करने का प्रयास करते हैं। इन क्षेत्रों की विकृतियाँ की मानों वे चिकित्सा कर इनमें सुधार लाना चाहते हैं। वे समाज का पतन देखकर चुप नहीं रह सकते। औरों को भी अपने साथ लेकर उसके सुधार कार्य में जूट जाना चाहते हैं। इसलिए गिरते हुए समाज को सँभालकर उठने-उठाने की वे प्रेरणा देते हैं। इस सब को देखकर हम उन्हें नि:संदेह प्रमुख व्यंग्यकारों की पंक्ति में विराजमान देखकर प्रसन्न होते हैं। अंत में कहा जाए तो श्रीलाल शुक्ल जी के साहित्य में अनेक सुधार छिपे हुए हैं।

श्रीलाल शुक्ल जी का जीवन विकास :

श्रीलाल शुक्ल जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रकट करने से पहले उनके जीवन विकास का परिचय उपलब्ध कर लेना मुनासिब समझा जाता है। उनके जीवन विकास को देखें तो पहले उनका चित्रण उद्भव एवं जन्म स्थान को लेकर बाबू श्रीलाल शुक्ल जी को प्रस्तुत करना चाहिए। इसके बाद अस्तित्व विकास में उनके माता-पिता। उनको आगे बढ़ाने में उनका क्या योगदान रहा है। श्रीलाल शुक्ल जी के जीवन विकास में उनका बचपन, शिक्षा- दीक्षा, जीविकार्जन, विवाह, पारिवारिक अस्तित्व, साहित्य सेवी स्नेही, प्रेरणा- स्रोत आदि। इसको त्याग कर जीवन विकास में सृजन, साहित्य-यात्रा पुरस्कार को चित्रित कर सकते हैं।

जन्म एवं जन्मस्थान :

साठोत्तरी युग के विलक्षण गद्यकार, स्वातंत्र्योत्तर या प्रेमचन्दोत्तर युग के गुणवत्ता युक्त साहित्यकार शुक्ल जी का जन्म लखनऊ जनपद के मोहनलालगंज कस्बे के निकटवर्ती गाँव में 31 दिसंबर 1925 अर्थात् बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक को एक सात्विक, सदाचारी, सुसंस्कृत कृषक परिवार में हुआ।

पारिवारिक परिचय :

बाबू श्रीलाल शुक्लजी ने अपने पिता को लेकर आप ही लिखा है कि-" मेरे पिता को निर्धनता, सात्विकता और लिपिबद्ध विचार तथा संगीत का संस्कार विरासत में मिला"[1] बाबू श्रीलाल शुक्लजी के दादा पंडित गदाधर प्रसाद शुक्लजी संस्कृत, हिंदी, उर्दू एवं भारतीय भाषा के बहुत बड़े पंडित तथा संगीत प्रेमी थे। कुछ वर्ष वह नजदीक के स्कूल में अध्यापक भी थे। किसी वजह से त्यागपत्र देकर एक बड़े पंडित लेकिन सामान्य कृषक बनकर रह गये। उन्होंने आधी उम्र में सितार बजाना भी

सीखा था। श्रीलाल शुक्ल जी के जन्मों के कुछ ही वह समय पहले उनकी मृत्यु हुई। उनके पिता पंडित बृजकिशोर को संस्कृत, हिंदी एवं उर्दू भाषा का सामान्य ज्ञान था तथा कसरत और संगीत का भी शौक था उन्हें हिंदी और उर्दू की बहुत सी कविताएँ याद थी, जिन्में से अधिकांश कविताएं उन्होंने अपने पुत्रों को बचपन में धरोहर अमानत के रूप में दे दिया था। पिताजी का कोई कारोबार नहीं था। अस्तित्व के पूर्वार्द्ध में अपने पिता पर बाद में फिर कुछ वर्ष तकदीर तथा लगातार कम होती हुई खेती पर और जीवन के अंतिम समय में अपने बड़े पुत्र पर आधारित थे। सन् 1945 में जब बाबू श्रीलाल शुक्ल जी प्रयाग विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे, तब पिता ब्रजकिशोर का जीवनकाल समाप्त हुआ।

श्रीलाल शुक्लजी ने अपने एक आत्मकथा में 19वीं सदी के अंत में पैदा होने और बराबर गाँव में रहने वाली अपनी माँ का जिक्र करते हुए लिखा है: " खास बात यह है कि जिंदगी के बहुरंगी पक्षों के प्रति उनका उत्साह कभी कम नहीं हुआ। बाद में मेरे साथ रहते हुए वह क्रिकेट और बैडमिंटन का मैच बड़ी दिलचस्पी से देखती थीं। उन्हें सिनेमा देखने और गाना सुनने का भी खास शौक था। जब वह 57 साल की थी मैंने उन्हें राइफल चलना सिखाया और उनका निशाना अच्छा खासा हो गया था।"[2] माता देहाती अस्तित्व से बंधी हुई थी। गाँव के वातावरण में रहकर भी उन्हें पढ़ने लिखने का मौका मिल गया था और उन्हें हिंदी और अंक की सामान्य जानकारी थी। साधनहीन होते हुए भी उसमें उदारता तथा दृढ़ संकल्प भरा पड़ा था। सन् 1960 में अपने सबसे छोटे पुत्र भवानी शुक्ल जी के पास अल्मोड़ा में उनका जीवनांत हुआ।

बाल्यावस्था एवं शिक्षा-दीक्षा :

अजरौली गाँव में बाबू श्रीलाल शुक्लजी के वंश के अनेक परिवार थे, जिनमें दो उन्नतिशील थे, बाकी परिवार बहुत गरीब थे। शुक्ल जी का परिवार अपनी गरीबी के होते हुए भी पिछली तीन पिढियों से अध्ययन की परंपरा से बंधा हुआ था। लेखक खुद कहते हैं-" बालवस्था (बचपन) से लेकर सन् 1948 तक जब मुझे संकटग्रस्त के कारण एम.ए. और कानून का अभ्यास त्यागना पड़ा, निर्धनता, शिक्षा तथा साहित्य के प्रति प्रबल आग्रह इन सत्त्वों के द्वारा मेरे व्यक्तित्व का परिष्कार होता रहा।"[3] अजरौली या आसपास के गाँव में जमींदारी प्रथा थी। गाँव में अलग-अलग जातियों की अपनी- अपनी मान्यताएं, रीति-रिवाजों, अपने तौर तरीके थे। गंदी गालियां, रास्ते आदि थे और एक भी सही बंधा हुआ मकान नहीं था। अजरौली गाँव के तीन ओर जमीन थे और आयामी में जंगल था। गाँव की चौथी दिशा की ओर लखनऊ जाने वाली सड़क थी और विशाल आम का बाग फैला हुआ था। श्रीलाल शुक्ल जी का दो भाइयों तथा तीन बहनों के बीच लड़कपन बीता। बचपन के दिनों में उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था।

बाबू श्रीलाल शुक्लजी की प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ जनपद के मोहनलालगंज कस्बे में हुई। उनके बड़े भाई पंडित शीतला सहाय ने उनकी अधिक सहायता की थी। वह अभावग्रस्त लड़कपन, परिश्रमी और व्यथाओं से परिपूर्ण छात्र अस्तित्व था। उन्होंने मिडल पास मोहनलालगंज लखनऊ जनपद से किया था। इसके बाद बाबू श्रीलाल शुक्ल जी ने कान्यकुब्ज कॉलेज, कानपुर से भी उन्होंने अपनी थोड़ी शिक्षा ग्रहण की, क्योंकि शुक्लजी के बड़े भाई कानपुर हाईस्कूल में नौकरी करते थे। इस बात को लेकर उन्होंने वहाँ शिक्षा ग्रहण करने का मौका मिला। सन् 1945 में इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक पूर्ण किया। बाबू श्रीलाल शुक्लजी की थोड़ी शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय से भी जुड़ी हुई है। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में अनुस्नातक तथा कानून के अभ्यास में प्रवेश लिया,पर अभ्यास अपूर्ण रहा। बाबू श्रीलाल शुक्ल जी ने यथार्थ शिक्षा तो ग्रहण की, लेकिन शिक्षा- दीक्षा को प्राप्त करने के लिए अधिक मेहनत भी करनी पड़ी।

जीवनयात्रा का साधन :

बाबू श्रीलाल शुक्ल जी ने स्नातक के बाद कुछ समय इंटर कॉलेज लखनऊ में अध्यापन कार्य किया। उसके बाद सन 1949 में स्टेट सिविल में उनको नियुक्ति मिली। बाद में आई.ए. एस. हो जाने से बढ़ती मिली। नौकरी करते समय "वह उन अधिकारियों में नहीं थे जो न मोटर के नीचे पैर रखना चाहते थे, न ही सड़क के नीचे उतरना। मिलो पैदल चलना हो या घंटों भर धूप में खड़े रहना हो, सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। पद से मिलने वाले लाभों के वह बंदीवान नहीं थे। मेहनत, ईमानदारी,

शीघ्र निर्णय तथा व्यवहारिक स्वभाव होने के कारण प्रशासन में नाम था, दबदबा था, एतबार था। हाजिरी बजाना स्वभाव में नहीं था। सेवा ही उनकी हाजरी थी, वही दरबार था, वही खुश करने वाली बात, आदर-सत्कार था।"[4] इस तरह जीवन यात्रा के लिए राज्य प्रशासनिक सेवा, उत्तर प्रदेश तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्य करते हुए वर्ष सन् 1973 में आई. ए.एस. में बढ़ती, विशेष सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के पद, अधिकारी स्तर पर वे वित्त और सहकारिता मंत्रालय से जुड़े रहे हैं।

श्रीलाल शुक्ल जी ने अपनी सेवा से भी बहुत अनोखे अनुभव प्राप्त किये और उन्होंने कच्चे माल की तरह इस अनुभव सम्पदा का उपयोग किया। "शासन के वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते अनेक मुख्यमंत्रियों, विधायकों और उनके दलालों का अध्ययन करने का उन्हें अवसर मिला। यही कारण है कि एक से एक दिग्गज राजनेताओं की जन्मपत्री उनके पास से हैं। उनकी योग्यताओं, अयोग्यताओं, आकांक्षाओं और उनके अंतर्विरोधों को भी समझते हैं।"[5]

विवाह एवं पारिवारिक जीवन :

बाबू श्रीलाल शुक्लजी जब कान्यकुब्ज वोकेशनल इंटर कॉलेज, लखनऊ में अध्यापन कार्य कर रहे थे। तब सन् 1948 में उनका विवाह कानपुर के सुसंस्कृत परिवार की कन्या गिरिजा जी से हुआ। बाबू श्रीलाल शुक्ल जी को अपने परिवार से अपार अपनापन, प्रेम है, वे पत्नी गिरिजा और संतानों के प्रति पूरी तरह प्रत्यर्पित है। उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहा है, कभी कानपुर में, कभी लखनऊ में, कभी इलाहाबाद में, इस समय लखनऊ में इंदिरानगर में रह रहे हैं। व्यंग्य का वागीश बाबू श्रीलाल शुक्ल जी को संतति के रूप में तीन पुत्रियाँ रेखा, मधूलिका, विनीता तथा पुत्र आशुतोष है। सभी खुशहाल जीवन बिता रहे हैं।

व्यक्तित्व :

बाबू श्रीलाल शुक्लजी का व्यक्तित्व अंदर और बाहर एक जैसा है। इसके विपरीत जीवन के विभिन्न रूपों में उनकी गहन दिलचस्प है। श्रीलाल शुक्ल जी पाखंड विखंडन के मास्टर लेखक है। वास्तव में श्रीलाल शुक्ल जी का व्यक्तित्व और लेखन बहुत पेचीदा नहीं है। उनका सौंदर्य उसकी सहजता और मौलिकता में है। श्रीलाल शुक्ल जी में अफसरी की बू भी बहुत कम है, नहीं के बराबर, अवकाश प्राप्ति के बाद तो एकदम नहीं है। उनके व्यक्तित्व का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण उनकी उदारता और गरिमा है। उदारता और गरिमा का बखूबी चित्रण, वर्णन व्यंग्य के सटायर ने अपनी रचनाओं में भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्थान-स्थान पर अपनी गरिमा और उदारता कायम रखी है। कई बार उनके सामने परेशानियां और समस्याओं ने अपनी पकड़ में लिया, पर उन्होंने बराबर बड़े धीरज और समझदारी पूर्वक उनका सामना किया, और उन पर फतेह पायी। उनके व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषता है उनकी धैर्यता। एक साहित्यकार की योग्यता से उनका स्पष्ट विचार है कि-"लेखक को समझना अपने पालतू कुत्ते को समझने के मुकाबले ज्यादा महत्त्वपूर्ण कार्य है।"[6]

श्रीलाल शुक्ल जी के व्यक्तित्व में हमें प्रतिबद्धता को देखते हैं। उन्होंने अपनी आँखों से धूर्त व्यवस्था को देखा और परखा है। "उन्होंने छल, कपट और सरकार के दैनिक भ्रष्टाचार को बहुत करीब और कायदे से देखा है। शायद वे इसी पाखंड को देखने के लिए सरकारी अफसर बने हो। प्रशासक रहे, लेकिन अपने भीतर के परिवेश को नहीं बदला।"[7] उनकी दृष्टि पैनी रही है, उन्होंने देश में हो रहे भ्रष्टाचार, रिश्वत, फरेब, गरीब लोगों की परेशानियाँ सभी को उन्होंने नजदीक से देखा। शुक्ल जी को अपने नौकर और चपरासियों में कभी-कभी अपने रिश्तेदार या अपना अतीत अंधेरा नजर आता है। वह प्रतिभा और ज्ञान से भरपूर है। वे स्मरण के धनी है। उनके व्यक्तित्व की एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, संस्कृत आदि भाषा पर सामर्थ्य हासिल हुआ है। वे आसानी से चारों भाषाओं में पद सुना सकते हैं। उनके जीवन में अगर कोई अभाव है तो केवल एक-दो प्रेयसी का।

श्रीलाल शुक्ल जी की स्वभावगत विशेषताएँ :

1. श्रीलाल शुक्ल जी का कई भाषाओं पर अधिकार है, अवधि, हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी आदि पर। इनमें से किसी भी भाषा में फर्राटे से बातचीत कर सकते हैं।

2. वह जीवन की विसंगतियों और यथार्थ की विडंबनाओं और परस्पर विरोधी स्थितियों की परतें उघाड़ते जाते हैं।

3. श्रीलाल शुक्ल जी किसी बात को छिपाते नहीं, अपने आत्मीय जनों के बीच इसका खुला इजहार कर सकते हैं। इस प्रकार हम उनके स्वभाव में पारदर्शिता के दर्शन करते हैं।

4. उनकी बातों में एक खुलापन रहता है। कई बार तो एक शिशु सा भोलापन भी महसूस होता है।

5. उनकी जिजीविषा का स्थान असाधारण है। इस प्रकार उनकी दिलचस्पियाँ विविध है।

6. बाबू श्रीलाल शुक्ल जी में हम सरलता, सहजता, सादगी, नम्रता, विनयशीलता, अपनापन, स्वाभिमान, मधुर भाषा ये उनका स्वभाव रहा है।

श्रीलाल शुक्ल जी का कृतित्व-परिचय :

बाबू श्रीलाल शुक्ल जी ने अपने लेखन में उपन्यास, कहानी, व्यंग्य, आलोचना निबंध, संपादन साक्षात्कार, अनुवाद विभिन्न गद्यात्मक एवं पद्यामक साहित्य को अपनाया है। लेकिन उनकी साहित्यिक सृष्टि काव्य रचना से आरंभ हुआ था, फिर भी उनको यह एहसास हो गया था कि वे एक कवि की तुलना से अधिक सक्षम लेखक हो सकते हैं। श्रीलाल शुक्ल जी में साहित्य-सृजन के बीज बचपन से ही विद्यमान थे, जिन्हें गाँव के साहित्यिक वातावरण में पनपने का मौका मिला।बारह-तेरह साल की उम्र में उन्होंने घनाक्षरी-सवैया लिखना प्रारंभ किया था। एक रेडियो नाटक की रुमानियत और अवास्तविकता से भरी हुई प्रवृत्ति के खिलाफ प्रतिक्रिया दिखाते हुए उन्होंने 'स्वर्णग्राम और वर्षा' नाम की एक यथार्थपरक व्यंग्य पूर्ण रचना लिखी। लेकिन उन्होंने कविता त्यागकर सब कुछ लिखा। उन्होंने आगे गद्य लेखन के माध्यम से हिंदी साहित्य में प्रवेश किया और कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ दी। इन रचनाओं में काल अस्तित्व के संपूर्ण वातावरण को प्रकट किया है।

उपन्यास साहित्य :

बाबू श्रीलाल शुक्ल जी को उपन्यास साहित्य में अधिक कामयाबी मिली है। उनका प्रारंभिक उपन्यास है- सूनी घाटी का सूरज, उसके बाद 'अज्ञातवास, राग दरबारी, आदमी का जहर, सीमाएँ टूटती है, मकान, विश्रामपुर का संत, राग विराग, बब्बरसिंह और उसके साथी' आदि। इसमें औपन्यासिक कृति राग दरबारी का विशिष्ट स्थान है। इन्होंने प्रथम श्रेणी का स्थान हिंदी व्यंग्य के इतिहास में प्राप्त किया है। श्रीलाल शुक्लजी का रागदरबारी एक देहात-शिवपालगंज की कथा है जो संपूर्ण भारत की कथा बनती है क्योंकि सही भारत देहात ।में इसलिए शिवपाल गंज के बारे में कहा गया है- " जो कहीं नहीं है वह यहाँ है और जो यहाँ नहीं है, वह कहीं नहीं है।"[8]

श्रीलाल शुक्ल जी का पहला उपन्यास सूनी घाटी का सूरज' 1957 में लिखा गया है। सूनी घाटी का सूरज एक ग्रामीण युवक के बारे में है जो शिक्षित और प्रभावशाली होने के बावजूद खुद को एक समाज में पाता है, जहाँ उसकी सोच, आदर्शों और गुणों के व्यापारिक प्रतिष्ठित है। लेकिन उस बाजार में अपनी गुणवत्ता उपयोगिता को साबित करने के लिए उसके पास ना तो सिफारिश है, न उसके संबंध किसी बड़े से हैं और न ही रिश्वत देने के लिए उसके पास धन है। उसके अपने पिता को कर्जदार होकर एक खानदानी ठाकुर के यहाँ बंधुवा जैसा जीवन जिते देखा है और उसकी मृत्यु के बाद उसकी अपनी पढ़ाई एक हेड मास्टर के पास अनाथ की तरह रहकर, सेवा करके और ट्यूशने आदि करके पूरी हुई, इस तरह उसने एक मेधावी छात्र के रूप में प्रथम श्रेणी की डिग्री हासिल की। लेकिन अपनी उन सीमाओं के चलते जिनके लिए वह खुद नहीं, बल्कि व्यवस्था जिम्मेदार है, इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ सूची :

1. शुक्ल, श्रीलाल, 'यह घर मेरा नहीं, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2000 पृ.103
2. संपादक अखिलेश, श्रीलाल शुक्ल की दुनिया, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2000 पृ. 27
3. शुक्ल, श्रीलाल, 'सुरक्षा और अन्य कहानियां,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000 पृ. 23
4. शर्मा, राजनाथ, साहित्यिक निबंध, 2003 पृ. 549

5. मदान, इंद्रनाथ, हिंदी का हास्य व्यंग्यविद्या का स्वरूप और विकास, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2001 पृ. 42
6. देसाई, डॉ. बापूराव, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1998 पृ. 27
7. डॉ.शशिभूषण, हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, भारत प्रकाशन, 2002, पृ.120
8. शुक्ल, श्रीलाल, यह घर मेरा नहीं, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2001, पृ.115